Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parametres of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:9(1), September, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available : www.ijmer.in

नारी की सभ्यता, संस्कृति में भूमिका व आधुनिक नारी विमर्श

डॉ शरद भटट
सह प्राध्यापक
पी एन जी राजकीय
स्नाकोत्तरमहाविद्यालय रामनगर
नैनीताल (उत्तराखण्ड)

दीपिका रौतेला
शोधछात्रा
पी एन जी राजकीय
स्नाकोत्तर महाविधालय रामनगर
नैनीताल(उत्तराखण्ड)

शोध सारांश–

नारी ईश्वर की एक अद्भुत रचना, जिसे सदैव से त्याग व समर्पण की प्रतिमा कहा जाता है क्योंकि मैं और मेरे लिए जैसे भाव उसने कभी जिये ही नहीं अपितु वह तो सदैव से मात्र दो शब्दों से परिचित है 'हम' और 'हम सबका'। परन्तु वह एक प्रतिमा नहीं बल्कि एहसासों व इच्छाओं से भरी हुई साँस लेती हुई एक इन्सान है। उसने स्वयं के लिए कभी घर– परिवार एवं समाज में कोई इच्छा प्रकट नहीं की परन्तु कई ऐसे स्वपन हैं जिन्हें वह हर पल जीती हैं, पर वास्तविकता में इन्हें जीने का अवसर शायद ही उसे कभी मिले। ऐसे कई प्रश्नों जिनका उत्तर वह अपने परिवार व समाज से चाहती है और ऐसे कई ख्वाबों जिनका साक्षात्कार वह प्रत्यक्ष रूप से करना चाहती हैं, प्रस्तुत लेख के द्वारा उन सभी का जिक्र व उसकी फिक्र की जा रही है।

मूल शब्द – नारी, सभ्यता, सशक्तिकरण, विकास, चरित्र, समाज

"किसी सभ्यता की मूल भावना को समझने और उसकी श्रेष्ठता को पहचानने तथा सीमाओं को ज्ञात करने का सबसे अच्छा तरीका है इसके अंतर्गत महिलाओं की स्थिति और हैसियत का अध्ययन करना।"[1]

उपर्युक्त पंक्तियॉ समाज की प्रगति व विकास में महिलाओं कें उस स्थान व सम्मान को बयॉ करती हैं जिसका साक्षात्कार उसने ख्वाबों से परे वास्तविकता में कभी किया ही नहीं। पुरूष की अर्धांगिनी तो उसे सदैव कहा जाता है परन्तु सर्वस्व न्यौछावर के पश्चात् आज भी नारी के प्रति सम्पूर्ण पुरूष वर्ग की यह धारणा कोषों दूर है। सम्पूर्ण धरा इस तथ्य से अवगत है कि नारी सृष्टि का

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parametres of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:9(1), September, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available : www.ijmer.in

अमूल्यतोहफा एवं बहुमूल्य संसाधन है उसके बिना सृष्टि की कल्पना नगण्य है। औरत ना हो तो सृष्टि का निर्माण सम्भव नहीं है। सृष्टि निर्माण में मनु के साथ श्रद्धा का योगदान नकारा नहीं जा सकता।तात्पर्य यह है कि संसार में गृहस्थी,परिवार,देश, समाज, घर के संचालन में महिलाओं का योगदान महत्वपूर्ण है।[2] इसके अतिरिक्त भी करूणा,दया,प्रेम, त्याग, समर्पण जैसे मानवीय गुण जो प्रत्येक मनुष्य में होने आवश्यक है, क्योंकि यह हमें उत्कृष्टता की ओर ले जाते है अर्थात् बेहतरीनी की ओर, नारी इसका जीता जागता उदाहरण है। इन सब से परिपूर्ण होने के बावजूद भी समाज, घर–परिवार इस संसार में उसे स्वयं के अस्तित्व की शिनाख्त करने की आवश्यकता आखिर क्यों पड रही है? और क्यों आज भी उसके स्वपनों का संसार वास्तविकता को प्राप्त नही हो पाया है?

इस संसार में आने से पहले ही नारी के जीवन के संघर्ष शुरू हो जाते है, सर्वप्रथम तो उसे इस संसार में आने से पहले ही मृत्यु दे दी जाती है और अगर संसार में आने भी दिया जाये तो गर्भ में उसके पलते वक्त भी यह घर परिवार, समाज चिन्तित रहता है कि कहीं शिशु लड़की ना जन्मित हो जाए और अगर पहली सन्तान लड़की जन्मित होती है तो यह चिन्ता और अधिक बढ़ जाती है कि अगर अगली सन्तान लड़का न हुआ लड़की हो गयी तो कुल, वंश तो पूर्णतः समाप्त। पर इन सब चिन्ताओं से बेखबर जब लड़की इस संसार में आती है, तो अपने साथ कई ख्वाबों व स्वपनों को लेकर आती हैं जिनके पूरा होने का वह ताउम्र इन्तजार करती है और यह स्वपन साकार हो पाये इसका भी ऐतबार नहीं।

बचपन से ही संस्कार, मर्यादा जैसे बड़े–बड़े शब्द छोटे–छोटे रूपों में उसके दिलों दिमाग में बसा दिये जाते है कि तुम लड़की हो, लड़की की तरह रहा करो, तुम्हारे लिए यह बेहतर है यह नहीं, समय से आओ जाओं, ये करो, वो करो, तुम्हें यह आना चाहिए वह नहीं, घर के काम–काज में निपुण बनो इत्यादि। इस तरह की न जाने कितनी बातें उसके जहन में ताउम्र बसी रहती है कई बाते इनमें से उसकी सुरक्षा व चिन्ता का कारण भी हो सकती है, परन्तु केवल वही क्यों और कब तक? क्यों यह बातें लडकों को नही बतायी जाती ना ही सिखायी जाती है। आज समाज में स्त्रियों के प्रति पुरूषों की बढ़ती जटिल मानसिकता जिसमें सम्मान, समानता, प्रेम का भाव नहीं अपितु तुच्छ व निकृष्ट समझने का भाव अधिक है इसी सीख का दुष्परिणाम हैं, उन्हें बचपन से यह नहीं सिखाया जाता कि वह लड़कियों का सम्मान करें उनके प्रति समानता का भाव रखें और बराबरी का हक दें। अगर पुरूष के साथ तुलना करते हुए चलेंगे तो महिला हमेशा पीछे रही है बल्कि हम यों कहें कि पुरूष ने महिलाओं को, बालिकाओं को, बेटियों को, बहनों को हमेशा पीछे ही रखा है, उनके साथ ना बराबरी और नाइंसाफी का व्यवहार किया है जिनको मौका मिला उन्होनें तो दिखा दिया कि वे भी शिक्षा या अन्य चीजों में आगे बढ़ सकती है।[3] बेहतर कर सकती है और जिनको मौका नहीं मिला या नहीं दिया गया वह आज भी अपनी पुरातन स्थिति में ही जी रही हैं।

नारी के स्वपनों का संसार इस हकीकत से बिल्कुल परे है वह चाहती है कि वह उस संसार में जन्म ले जहॉ उसके प्रति कोई भय ना हो। ना उसके माँ की कोख से उसकेलड़की के रूप में जन्मित होने का भय, ना उसके हर पल सुरक्षा का भय, ना जीवन भर एक बोझ या जिम्मेदारी को उठाने का भय, ना उसकी इज्जत का भय, ना कहीं आने जाने का भय। इन सभी प्रकार के भय से वह भी निश्चिंत होकर यह जिन्दगी खुशी से जीने के स्वप्न देखती है कि शिक्षा का मौका उसे भी उतना ही मिले जितना एक लड़के को, उसे पाने या काबिल बनने के लिए बाहर जाने की स्वतंत्रता उसे भी मिले, वह आत्मनिर्भर बने अपने मनमुताबिक जीवन साथी चुन सकें, मनमुताबिक ऊँची उड़ान भर सके समाज में अपना नाम कर सकें अर्थात् जीवन में कुछ बेहतर कर सकें।

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parametres of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:9(1), September, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available : www.ijmer.in

सामाजिक विकास के युग मे आज नारी शारीरिक, मानसिक दृष्टि से पुरूषों से किसी अर्थ में कम नही हैं जो कार्य पुरूषों के अधिकार क्षेत्र वाले माने जाते थे, उन्हे नारी आज पूर्ण साहस के साथ कर रही है। स्त्री और पुरूषों में प्राकृतिक साहचर्य सम्बन्ध है और भेद केवल सामाजिक स्तरों पर ही है, आज महिलाओं को असंख्य समस्याओं का सामना करना पड रहा है कन्या भ्रूण हत्या, दहेज,बलात्कार, आत्महत्या उनके साथ परिजनों का हिंसात्मक व्यवहार, प्रतिकूल कार्य स्थितियाँ, यौन शोषण इत्यादि। ऐसे में महिलाओं को न केवल विकास के प्रत्येक क्षेत्र में समान समझने की आवश्यकता महसूस की जा रही है बल्कि आज आवश्यकता है कि स्त्री को अलग पहचान वाला मनुष्य माना जाए। लिंग समानता या स्त्री स्वतंत्रता की समस्या एकदेशीय नहीं अपितु विश्वव्यापी है। नारी को मनुष्य के गौरव से वंचित कर उसे दोयम दर्जे का नागरिक माना जाता है।[4] यह मानना वाकई महिलाओंको कमतर आंकना है, पर वास्तविकता में वो कमतर है नहीं। नारी को अबला कहकर पुकारा जाता रहा है परन्तु गॉधी जी ने इसका खण्डन किया। उन्होनें कहा कि अबला से तात्पर्य बिना शक्ति के है और शक्ति से तात्पर्य मात्र शारीरिक शक्ति से नहीं अपितु मानसिक शक्ति, चारित्रिक शक्ति, भावनात्मक शक्ति और मानवीय शक्ति से है तो इन अर्थो में तुलना की जाये तो नारी पुरूषों की अपेक्षा अधिक मानवीय व शक्तिशाली हैं अतः उसे अबला कहना उसका अपमान हैं। उसे सबला की संज्ञा दी जानी चाहिए !

स्त्रीने कभी पुरुष वर्ग को अपना प्रतिद्वंदी नहीं माना नाही उससे आगे बढ़ने की होड़ रही, बल्कि वह तो हमेशा से स्त्री पुरुष के उस सहयोगी चित्र का साक्षात्कार करना चाहती है जिसकी मात्र उसने कल्पना ही की है, जिसमें दोनों एक दूसरे को सहारा देते हुए, सहयोग करते हुए, संभालते हुए आगे अपने लक्ष्य की ओर निरन्तर प्रगतिशील रहें। कई बार पुरुष के प्रति उसकी सहयोगी भावना भी उसके लिए कमजोरी बन जाती है हालॉकि बदलते परिवेश के साथ नारी में अपने प्रति रवैये में बदलाव तो आय ाहै, परन्तु इस परिवर्तन की गति बहुत मन्द है इस विषय पर प्रसिद्ध समाजशास्त्री *बायरन* ने अपने अध्ययन का निष्कर्ष प्रस्तुत करते हुए कहा, ***"प्रेम पुरुष के लिए जीवन का हिस्सा होता है और नारी के लिए सम्पूर्ण अस्तित्व।"*** इसलिए पुरुष की छत्रछाया में कभी–कभी अपने व्यक्तित्व को भूलजाना भी नारी की नैसर्गिकता ही होती है। वह पुरुष के बिनाअपने आपको गुच्छे से बिखरे हुए फूल की तरह एकांकी, असहाय व अस्तित्वहीन महसूस करतीहै।[5] जो उसकी सबसे बड़ी कमजोरी मानीज ातीहै। नारी का अपना स्वयं का अस्तित्व हैं, एक ऊर्जा और शक्ति भी जिसे उसके मातृत्व रुप में हमने सदैव से महसूस किया है। जिस तरह से नौ महीने तक एक शिशु को गर्भमें रखकर वह उसे पोषण व सुरक्षा प्रदान करती है और उसे इस संसार में लाने के पश्चात् भी हरपल माँ के रुप में उसकी देखभाल व उसे समर्थ व काबिल बनाने में उसकी भूमिका, पति बच्चों व पूर`परिवार को सॅभालना व उनकी हर खुशी का ख्याल करना उसकी शक्ति व ऊर्जा कोही प्रदर्शित करता है।नारी चाहती है कि अपने घर में एक बेटे के समान व पति के घर में उसकी मित्र, सहयोगी व अर्धांगिनी केरूप में ससुराल में बहु के रुपमें नहीं अपितुबेटी के रुप मे उसे स्नेह व सम्मान दिया जाये, उसे वह तवज्जो दीजाये जिसकी वह हकदार हैं। यह समाज व पुरुष वर्ग उसे आगे बढ़ने से नारोकें, बल्किउसे हरपल आगे बढ़ने को प्रोत्साहितकरें, सहयोग करें और ऐसा करना वह अपनी जिम्मेदारी समझें। आज के समय में समाजका एक भला पुरुष वर्गनारी को सफल व आगे बढ़ाने के लिए अपना हाथ ाआगे बढ़ाताहै सहारादेता है ताकि उसकी राहों की मुश्किलें थोड़ीआसानहो जायेंता`दूसरीओर एक कुंठित पुरुष वर्ग उसके बढ़ते कदमों को पीछे से खींचने व उसे गिराने से भी बिल्कुल नहीं डरता। ऐसेमें अच्छाकौन है, बुरा कौन इसकी पहचान करना भीउसके लिए मुश्किल हो जाता है।

आज के समाजमें महिला सशक्तिकरणको बढ़ावादियाजा रहा है, जो आवश्यक भीहै उसके भीतर के नारीत्व को जगाने के लिए। सशक्तीकरण की यह परिभाषा सबकेलिए अलग–अलगहै।किसी

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parametres of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:9(1), September, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available : www.ijmer.in

साक्षर व शहरी महिला के लिए सशक्तीकरण का अभिप्राय अपनेअधिकारों की प्राप्ति तथा उस प्राप्ति के लिए संघर्ष हो सकताहैकिन्तु एक निरक्षर महिला के लिए यह 'मन की हरियाली' होसकताहै। ऐसाकार्यजिसे करने के लिए वह स्वतंत्र हो औरजिसके माध्यम से वहअपने अस्तित्व व शक्तिको पहचानकर आत्मसन्तुष्टिअनुभवकरसकें।[6]भले हीदोनों वर्ग की महिलाओं के लिए सशक्तीकरण की परिभाषा अलग–अलगहोपरन्तु फिरभीदोनों के मायने एक हैं,वहहै स्वयं केअस्तित्वकोपहचाननाऔर यह बिना आत्मविश्वास के मुकम्मल नहीं होसकता। सशक्तीकरण की पहलीसीढ़ी नारीमें आत्मविश्वासको जगाना व उसकी स्वयं की शक्ति व ऊर्जा से उसे परिचितकराना ही है।

स्त्री उत्कर्ष का प्रश्नहमारेसभ्यता विमर्श में इसलिए विद्यमानहैक्योंकिहमवास्तवमें स्त्रियों की निजता, स्वतंत्रता व अधिकारको जितनाउन्हें देना चाहिए, नहीं दे सकेहैं। स्त्री भी जन्म से वे सभी अधिकारों को लेकर आती हैं जो उसकी गरिमा व प्रतिष्ठा के लिए आवश्यक हैं।लेकिनइसेभीस्वीकार हमें करनाचाहिए कि पितृसत्तात्मकसमाजने स्त्रियों को उस पायदानपरकभी नहीं आने दियाजोउन्हें जन्मनाप्राप्त थे। हमेंआज की परिस्थितियों में जब बात करनी हो तो आज भी हम यह नहीं कह सकते किस्त्रियॉं अधिकारों से वंचितनहीं हैं। यह बातअलगहैकिस्त्रियों ने इसीव्यवस्थामेंअपने तरक्की के कईप्रतिमानस्थापित किए। उन्हें किसीभी तरीके से पूर्णस्वतंत्रता के साथअच्छाकरनेकाअवसरमिलातोउन्होनें अच्छा किया, इसलिए उनके प्रतिमानआज विश्वमेंअपनी एक अलगछविप्रस्तुतकरतेहै।[7]परन्तु यह बेहतरस्थितिहरकिसीकोप्राप्त नहीं, अभीभीबहुतकुछहैजोकियाजाना बाकी है और आवश्यक भी।

प्रत्येक नारी को उसका वह सम्मान व अधिकार दिलानाजिसकीवहहकदारहै सभीकाफर्ज बनताहैऔरइस एहसास की शुरुआत घर–परिवार से होनी चाहिये, यह उनकीजिम्मेदारी है एक माँ, बेटी, बहन, पत्नी, या अन्य उन सभी रिश्तों के प्रति जिनका मूल रूप नारी हैं। जिम्मेदारीका एहसासहर पल नारी को हीक्यों कराया जाये, यह तो सभीपरलागू होना चाहिये। नारी एक ऐसाव्यक्तित्वजोकाफीसहज और सरल हैं उनके लिए जो उसे समझनाचाहते हैं औरकाफी जटिल व मुश्किल बन जाताहै उनके लिए जो उसे समझनाही नहीं चाहते, अतः यह समाजक्याचाहताहै यह उसेहीसोचना समझनापड़ेगा ।

आशा की जासकतीहैकि हम सभी नारी की कद्र करेंगे और उसके जीवन व गरिमा की फिक्र भी। उसे वह बेहतर घर–परिवारसमाज का माहौलदेगेंजहॉंवहबेखोफबिना सहमें, आत्मविश्वास से भरीहुई अपनेस्वपनों कोसाकारकरसकें, हकीकतमेंउनसे रुबरुहो पायें, जिसकीसदैव से उसने मात्र कल्पनाही की है।

सन्दर्भ –

1. इटैलिक मेरे,उद्धृत, अल्तेकर,ए0स0 – द पोजिशनऑफवीमेनइनहिंदू सिविलाइजेशन ,1987(पुर्नमुद्रित), पृ0– 1
2. सक्सेना, वन्दना – महिलाओंकासंसारऔर अधिकार, मनीषाप्रकाशन, दिल्ली, 2013
3. सिंह, आर0 ए0 पी0 – भारतीय महिला : शोषण, शिक्षा और संरक्षण,सुरभि पब्लिकेशन, जयपुर,2013, पृ0– 60
4. पारीक, दिशा– नारी विमर्श, संकल्प प्रकाशन, जयपुर,2015, पृ0– 1–2
5. कटारिया, कमलेश – नारी जीवन : वैदिककाल से आजतक,निकिता प्रकाशन गृह, जयपुर, 2013, पृ0– 141–142
6. कुमार, मनीष– महिलासशक्तिकरणदशाऔर दिशा, मधुरबुक्स, दिल्ली, 2010, पृ0– 9
7. त्रिपाठी, कन्हैया– स्त्री उत्कर्ष की ओर–प्रतिभा देवीसिंह पाटील,प्रवीण प्रकाशन,नईदिल्ली,2015